Indian Centre of ITI

INTERNATIONAL ASSOCIATION FOR PERFORMING ARTS AND RESEARCH

विश्व रंगमंच दिवस
२७ मार्च २०२२

आइ हम मानव जातिक ताहि कालखंड में जीबै छी जतय मनुक्ख स्वयं संगे एक दोसरा संग संबंध में बहुत गंभीर परिणामी परिर्वनक अनुभव करै छै। ओतय धरि अपन पहुँच बना पौनाई, ओकरा कहि पौनाई व्यक्त करब निरंतर अपना वश के बहार भेल जा रहल अछि।

सब दिन प्रति घंटा प्रति मिनटन के प्रसारित समाचार पर आइ दुनियाँ निर्भर अछि। की हम आहाँ लोकनि के सर्जक के हैसियत सँ अपन पूर्ण संभावना अभिरुचि आ सही दृष्टिकोण संगे आइ विशाल आ बहुआयामी खंड में महान परिवर्तनक ओइ खंड में पूर्ण सतर्कता सावधानी आ विशाल दृष्टिक संग प्रवेश करय लै आमंत्रित कै सकैछी वर्तमान में हमरा लोकनि चैबीस घंटाक समाचार श्रृंखला पर आधारित नहि छी। हमरा लोकनिक जीवनक अनुभव कें रेखांकित करबा में समाचार प. आ मीडिया पूर्णतः असमर्थ आछि।

कोविड-19 क दू वर्षक समय मनुक्खक ज्ञान कें कुंठित क देलकै, जीवन कें संकुचित आ आपसी संबंध कें तोड़ि देलकै। मनुक्खक बसावट के ई जमीनी शून्य पर आनि ढमका देलकै। एहि समय में अकानवाक छैक जे जीवनक लेल कोन तरह बियाक बेर-बेर खगता भ रहल छैक। जीवन पर भेल कोन-कोन तरहक आक्रमण कें सदाक लेल नष्ट क देबाक छैक। कतेको लोक एहि झंझाववात सँ प्रभावित भ 'क' कात लागल छथि। तर्कहीन एवं अप्रत्याशित ढंग सँ समाज में हिंसा बढ़ि रहल छैक पहुलका सामाजिक तंत्र सब एकाएक निर्दयताक संरचना में बदलि रहल अछि।

हमरा लोकनिक मनोरम समारोह सब कत 'अलापित भ' गेल। आब हमरा सब के की सब मोन राखवाक चाही। हमरा सबकें एहि पर विचार करबाक चाही जे अपन परंपराक सूत्र में कोन-कोन चीज ताकबाक चाहि जाहि सँ जीवन चक्रक लेल नव परिकल्पना उमड़ि एकए आ जे पहिने ई नहि भेल होए।

महाकाव्यक नाटकशाला कें नव परंपराक दूरदर्शिता उद्देश्य, स्वास्थ्य लाभ मरम्मति आ देखभालक खगता छैक। के ओ हमर मनोरंजन करथि, हमरा एकर आवश्यकता नहि अछि। हमरा लोकनि सह मिलू भ' क' एक ठाम जमा होई, हमरा लोकनि आपस में जगह बाँटी आ हमरा लोकनि कें जगह आ संसाधनक बटवारा करबाक प्रयास सीखबाक चाही सबसँ अवश्यक अछि जे के ओ हमर गप सुनए सबकें समान आदर भेटए आ सब गोटे सुरक्षित महसूस करी। नाटकशाला धरती पर ओ जगह थिक जाहि ठाम मनुक्ख, भगवान, पादप, जानवर बरखाक बुन्नी, नोर आ पुनर्जननक बीच समानताक अभ्यास होईत अछि समानता गंभीर भ' क' सुनब गुणक चककक पाछों सुन्दरता छुपल रहैत छैक मुदा ओकरा कतबहि में गंभीर खतराक परस्पर क्रिया, सम्भाव, विवेक, आ धैर्यक गंभीर चुनौती सहो नुकायल रहैत छैक गौतम बुद्धक आवतंसक सूत्र में मानव जीवनक दस प्रकारक महान धैर्यक वर्णन आछि एहि में सवसें प्रबबल धैर्य, सहनशीलता दृढ़संकल्पताकें मानल गेल जकरा मरीचिका कहल जाइत अछि।

AVARTAN, 5 HILL VIEW SOCIETY, 46/4 ERANDAWANE, PAUD ROAD, PUNE, MAHARASHTRA 411038
Email: iapar.india@gmail.com

एहि संसार में नाटकशाला सर्वदा एकटा मरीचिकाक निर्माण करैत अछि जाहि सँ जीवनक मोहमाया, असमर्थता, मुक्ति आ स्पष्टताकें मनुक्ख बलपूर्वक देखि आ अनुभव क' सकए।

निश्चयपूर्वक कहि सकेंत छी जे हम सब जे देखि रहल छी आ जाहि विधि सँ अनुभव क' रहल दी ताहि सँ वैकल्पिक वास्तविकता, नव संभावना, अलग-अलग उपाय, संबंधक अदृश्यता आ असमय संवर्धक परिदृश्य देखबा में समर्थ नहि भ' रहल छी।

हमरा लोकनिक ज्ञान आ मस्तिष्क कें ताजगीक खगता छैक। हमरा अपन परिकल्पानाक क्षमता कें अपन इतिहास बोध आ भविष्य निर्माणक लेल ताजगी चाही।

ई काज एक गोटे वा किछु गोटे एकांतवास रहिक' नहि क' संकेत छथि।

एहि काजके एक संगे करबाक लेल नाटकशाला आमंत्रण दैत अछि।

आँहाँ लोकनिक काजक लेल हृदय तल सँ धन्यवाद।

- पीटर सेलर्स

Translated in Maithili by:

Bhairab Lal Das
Writer